

स्टूडेंट आंत्रप्रेन्योरशिप के जरिए सीख सकते हैं कामयाब बिजनेस के गुर

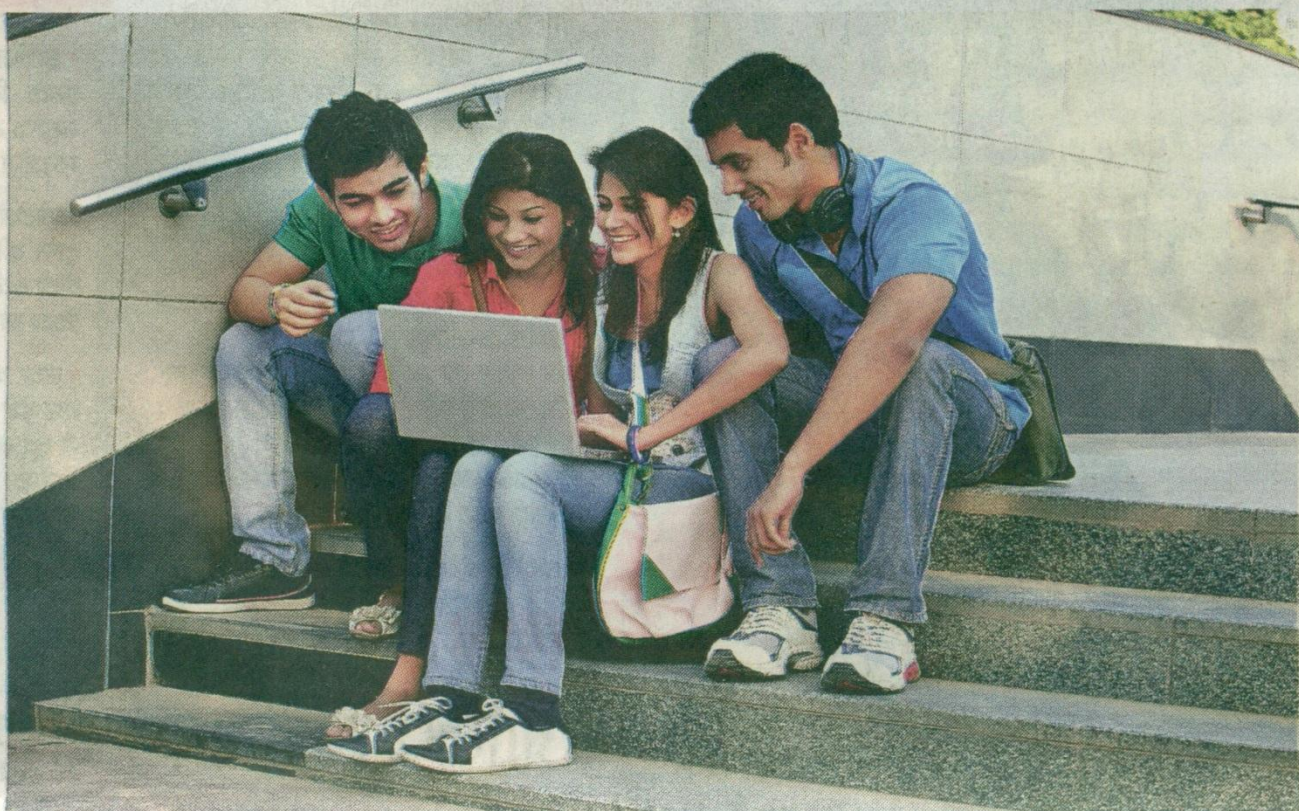
दे श में 61% स्टूडेंट्स आंत्रप्रेन्योरशिप को कमाई का एक बेहतर जरिया मानते हैं। खासतौर पर शहरी छात्रों की तुलना में ग्रामीण स्टूडेंट्स खुद का बिजनेस शुरू करने में ज्यादा दिलचस्पी ले रहे हैं। नीलसन की एमवे इंडिया आंत्रप्रेन्योरशिप रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया है। हालांकि रिपोर्ट में 71 प्रतिशत प्रतिभागियों ने फेलियर के डर को बिजनेस की शुरुआत में सबसे बड़ी रुकावट भी माना है। साथ ही 80 प्रतिशत प्रतिभागियों ने यह भी स्वीकार किया है कि आंत्रप्रेन्योरशिप स्किल्स सीखी जा सकती हैं। एमवे प्रेसिडेंट डूग डे वोज के मुताबिक, भारत आंत्रप्रेन्योरशिप के लिए तैयार है। वैसे भी यह टॉप 10 ग्लोबल मार्केट्स में से एक है। ऐसे में स्टूडेंट स्टार्टअप्स के लिए यहां बेहतर संभावनाएं हैं। अगर आप भी स्टूडेंट के रूप में अपने वेंचर की शुरुआत करना चाहते हैं तो यहां दी गई जानकारी आपके काम आ सकती है।

आइडिया से आगे बढ़ें

अक्सर स्टूडेंट्स अपनी पूरी ऊर्जा आइडिया सोचने और उसे लागू करने की प्लानिंग में लगा देते हैं। इसके लिए वे काफी समय खर्च करते हैं। इसके बजाय आपको अपने सभी आइडियाज को टेस्ट करना चाहिए। अपने आइडिया, विजन, प्लान, चुनौतियों, रेवेन्यू सोर्सिंग के बारे में लिखें। इससे आपको आइडिया से एग्जीक्यूशन की ओर बढ़ने में मदद मिलेगी।

कैंपस का फायदा लें

बिजनेस प्लान कॉन्टेस्ट में हिस्सा लीजिए। इससे आपको न केवल अपने आइडिया पर फीडबैक मिलेगा बल्कि निवेश की संभावनाएं भी बढ़ेंगी। हैकाथंस भी एक अच्छा प्लेटफॉर्म है जिसकी मदद से टैलेंट को विकसित किया जा सकता है। इसके अलावा अगर कॉलेज में कोई आंत्रप्रेन्योरशिप क्लब हो तो उसकी मदद बिजनेस सेटअप में ले सकते हैं।



प्रोफेशनल नेटवर्किंग

कैंपस से बाहर निकलकर बिजनेस प्रोफेशनल्स से संपर्क बढ़ाइए। अपने आइडिया के बारे में उनसे बात करें। यह मत सोचिए कि कोई आपका आइडिया चुरा लेगा। बल्कि अनुभवियों के फीडबैक से आप उसे बेहतर भी बना सकते हैं।



टीम का चयन

इंटरनेट पर कई ब्लॉग व वेबसाइट्स हैं जो टीम और कोफाउंडर चुनने के लिए गाइड करती हैं, लेकिन आप बिना सोचे-समझे फैसला न लें। टीम चाहे छोटी हो या बड़ी, अपनी लीडरशिप स्किल्स पर भी मेहनत करें। अच्छा आउटपुट इन स्किल्स पर भी निर्भर करता है।



टेक्नोलॉजी व डिजाइन

वेबसाइट, एप व सोशल मीडिया बिजनेस का जरूरी हिस्सा हैं। ऐसे में आइडिया डेवलपमेंट, सेल्स व कस्टमर कम्यूनिकेशन में अपने डेवलपर्स व डिजाइनर्स को भी शामिल करें। ताकि वे यूजर की समस्याओं के लिए सही समाधान निकाल पाएं।



इन्वेस्टमेंट व रेवेन्यू

रेवेन्यू के लिए भी कई मॉडल हैं। जरूरी नहीं कि इसके लिए भारी भरकम निवेश ही करें। बेसकैप, किकस्टार्टर, जोहो समेत कई स्टार्टअप्स हैं, जो भारी निवेश के बिना भी सफल हुए हैं।



फेलियर

असफलता की संभावनाएं हमेशा रहती हैं। अगर आपका आइडिया नहीं चल पाए तो भी निराश न हों। बल्कि यह सोचिए कि यह आपके लिए नई कॅरिअर स्किल्स सीखने का मौका था। इस अनुभव के साथ आपकी नई शुरुआत में सफलता की संभावनाएं बढ़ेंगी।



नए आइडिया के साथ बढ़ रहा है यह ट्रेंड

कॉलेज के साथ-साथ अब स्कूल स्तर पर ही स्टूडेंट्स में आंत्रप्रेन्योरशिप को लेकर रुझान नजर आ रहा है। चेन्नई के श्रावन कुमार (17) और संजय कुमार (16) गो डाइमेंशंस नामक ऑनलाइन वेंचर चलाते हैं। वे हार्डवेयर डिवाइस के साथ-साथ एंड्रॉइड व आईओएस एप्लीकेशंस के लिए एप्स भी बनाते हैं। संजय कहते हैं हम अपने एप्स की कोडिंग करते हैं, साथ ही हमने किताबों व रिसर्च के जरिए टेक्नोलॉजिकल ट्रिक्स सीखी हैं। दोनों ने भविष्य के लिए बड़ी योजनाएं तैयार की हैं, वे कम्प्यूटर साइंस में आगे पढ़ाई करके अपने वेंचर को आगे ले जाना चाहते हैं। इसी तरह 18 वर्षीय मिहिर मेडा अर्बन अप नामक स्टार्टअप चलाते हैं। मिहिर ने समाज के कमजोर वर्ग के लिए यह सोशल वेंचर शुरू किया है। जिसमें शहरी गरीबों को बेहतर व स्वच्छ पर्यावरण में कम कीमत वाले घर उपलब्ध करवाए जाते हैं। इसी तरह स्टूडेंट्स अब बड़ी संख्या में नए आइडियाज को लेकर न केवल प्रयोग कर रहे हैं बल्कि उन्हें सफल वेंचर का रूप भी दे रहे हैं।